International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2021, Accepted: 01-09-2021, Published: 17-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 39-42

महिला लेखन: चुनौतियाँ व संभावनाएँ

डॉ. योगेशभाई प्रतापसिंह झाला

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभागाद्यक्ष, श्री के. आर. देसाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, झालोद, दहोद, गुजरात, भारत

सारांश

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं ने युग के यथार्थ को, स्त्री पुरुषों के संबंधों में आए उतार-चढ़ाव को अपने लेखन में प्रस्तुत किया है। नारी-पुरुष के आपसी संबंधों में आई गिरावट, उनके दांपत्य जीवन की समस्याएं, पारिवारिक विघटन की स्थिति आदि का चित्रण उन्होंने किया है। अब वे वैवाहिक बंधन को लेकर स्वतंत्र निर्णय रखती है। वर्तमान महिला लेखिकाओं ने परंपरागत मूल्यों को नकार दिया है और नवीन जीवन मूल्यों को ढूंढने का प्रयास करती नजर आती है। वह पुरुष के संग अपने संबंधों के नए अर्थ खोज रही है। आज का महिला लेखन इन के अंतर्मन की अभिव्यक्ति है। आज स्त्री के चेहरे पर कोई नकाब नहीं है। उनका व्यक्तित्व यथार्थ बोध के साथ उपन्यासों में प्रतिबिंबित हो रहा है।

मूल शब्द: नारी-मुक्ति आंदोलन, पुरुष सत्ता, संवेदनशील नारी, नारी स्वातंत्र्य, वैवाहिक बंधन, यौन-स्वातंत्र्य।

प्रस्तावना

वर्तमान समय की नारी आज हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। कथा साहित्य भी इनसे अछूता नहीं है। हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत स्वतंत्रता के पश्चात महिला लेखिकाओं ने एक नवीन जागरूकता का परिचय दिया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिला लेखिकाओं के लेखन की आवश्यकता इसलिए भी बढ़ जाती है कि 'पुरुष नारी स्वभाव का केवल दृष्टा मात्र है। दर्शक केवल देखी और सुनी बातों का ही वर्णन कर सकता है अनुभूति का अभाव होने के कारण उसके चित्रों में वह तन्मयता नहीं आ सकती, जो नारी के नारी-चरित्रों में संभव है।'[1] और यह निर्विवादित सत्य है कि एक नारी के मन को जितनी सरलता और सहजता से एक नारी समझ सकती है, उतना पुरुष कभी नहीं समझ सकता।

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं ने समस्त युग के यथार्थ को अपने लेखन में प्रस्तुत किया है। इनमें भी स्त्री पुरुषों के संबंधों में आए उतार-चढ़ाव को लेकर अपनी कलम चलाई है। 'आज नारी का अपना लक्ष्य है, मंजिलें है, उपलब्धियां है। लेखिकायें अपने उपन्यासों में बदलती मूल्य दृष्टि को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ रेखांकित करने में जुटी हुई है।... आज मात्र पुरुष सत्ता से बराबरी करने, उनके समान रहने, पुरुषों के बंधन को अस्वीकार करने से नारी- मुक्ति आंदोलन संभव नहीं है। जागरूकता की इस चेतना का दायरा भी आज विस्तृत होता जा रहा है। इन लेखिकओं ने

अपनी चेतना द्वारा लोक को दृष्टि दी है। साठोत्तरी उपन्यास-लेखिकाओं की नारियॉ आंचल में दूध और ऑंखों में पानी लेकर आगे नहीं बढ़ती। इनके उपन्यासों के अंदर की नारी, अंगारों के बीच दहकती है। इन लेखिकाओं ने एक मिथक को तोड़ा है और एक जीती-जागती संवेदनशील नारी की प्रतिमा को स्थापित किया है।'[2]

महिला लेखन के परिणाम स्वरुप सबसे बड़ी चुनौती तो उनके समक्ष यह उपस्थित हुई कि जैसे-जैसे उन्हें संघर्षमय जीवन से मुक्ति मिलती गई, नारी स्वातंत्र्य बढ़ने लगा, वैसे-वैसे ही नारी-पुरुष के आपसी संबंधों में भी गिरावट आती गई। उनके दांपत्य जीवन में अनेक समस्याएं पैदा होने लगी। पारिवारिक एकता के स्थान पर विघटन की स्थिति बढ़ती चली गई। वैवाहिक बंधन भी उन्हें एक सूत्र मात्र में बांधकर रखने में सफल नहीं हो सका 'नारी-स्वातंत्र्य के नाम पर यौन-स्वातंत्र्य धड़ल्ले से चल निकला है। आज की स्त्री कहती है कि जब पुरुष दो-तीन विवाह कर सकते हैं तो स्त्री ऐसा क्यों नहीं कर सकती। तलाक पुरुष ले सकता है, तो स्त्री क्यों नहीं ले सकती। तलाक के बाद यदि पुरुष पुनर्विवाह कर सकता है तो स्त्री भी ऐसा कर सकती है और ऐसा होने भी लगा है।'[3] मन्नू भंडारी रचित 'आपका बंटी' उपन्यास की नायिका शकुन डॉक्टर जोशी से केवल इसलिए शादी करने के लिए तैयार हो जाती है क्योंकि उसके प्रथम पति अजय ने मीरा से पुनर्विवाह कर के सुख से जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था। वह सोचती है- 'अजय को उसे दिखा ही देना है कि वह अगर एक नई जिंदगी की शुरुआत कर सकता है तो वह भी कर सकती है।'[4] यहॉ नारी-पुरुष के बीच अहं का टकराव है। अजय और शकुन दोनों ही पढ़े लिखे और नौकरी करने वाले समझदार व्यक्ति है फिर भी वह एक दूसरे से एडजस्ट नहीं कर पाते और एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। 'इस प्रकार हम देख सकते हैं कि स्त्री-शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार से आधुनिक स्त्री जहॉ आत्मनिर्भर हुई है, वहॉ दूसरी तरफ उसने कतिपय सामाजिक समस्याओं को भी जन्म दिया है। पुरानी, अनपढ़, अशिक्षित या रूढ़िवादी संस्कारों से ग्रसित नारी पूर्णतया परावलंबित होने से कई बार अपमानजनक समझौते को करते हुए भी दांपत्य की गाड़ी खींच ले जाती थी। वहॉ अब आधुनिक स्त्री आर्थिक दृष्टि से स्वनिर्भर होने पर उस प्रकार के समझौते को नहीं कर पाती। उसका स्वाभिमान-अहं उसे ऐसा नहीं करने देता। अतः कई बार स्त्री पुरुष के अहं की टकराहट में उनका दांपत्य जीवन खंडित हो जाता है।' [5] अब तो ऐसे उपन्यास भी लिखे गए हैं, जिनमें नारी के ऐसे चित्र उपस्थित है, जो विवाह के पवित्र बंधन को अस्वीकार करती है। अब वह वैवाहिक बंधन को लेकर स्वतंत्र निर्णय रखती है। अब वह पहले की तरह न तो किसी की भोग्या है और ना ही किसी के प्रति समर्पित। दीप्ति खंडेलवाल के 'प्रिया' तथा 'वह तीसरा' उपन्यास में नारी के ऐसे रूप के दर्शन हो जाते हैं।

नारी-स्वातंत्र्य के नाम पर आज विवाह पूर्व तथा विवाह पश्चात भी पर पुरुष से संबंध रखना एक सामान्य बात हो गई है। मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' तथा मेहरून्निसा परवेज के 'अकेला पलाश' जैसे उपन्यासों में नारी के ऐसे रूप के भी दर्शन होते हैं। वर्तमान महिला लेखिकाओं ने जैसे परंपरागत मूल्यों को अस्वीकार सा कर दिया है और नवीन जीवन मूल्यों को ढूंढने का प्रयास करती नजर आती है। 'यही कारण है कि आज अनेक महिला कथाकारों ने पारंपरिक नैतिकताओं के प्रति विमुखता प्रदर्शित की है। आज शिक्षित तथा बुद्धिवादी नारी को, पाप और पुण्य की मान्यताओं से स्वयं को विमुख करने का प्रयास कर रही है। वह पुरुष के संग अपने संबंधों के नए अर्थ खोज रही है। विवाह के बिना भी वह अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखना चाहती है, जिसके

लिए वह सतत प्रयत्नशील दिखाई देती है। आज के महिला उपन्यासकारों ने नारी की भी काम भावना को पुरुष के सदृश्य ही सहज माना है । इनके उपन्यासों में काम-संबंधों का अंकन विस्तृत रूप में न होकर सहज हुआ है।'[6] 'सेक्स' केवल घर की चार दीवारों तक ही सीमित न रहकर खुलकर चर्चा का विषय समझा जाने लगा है। अब नारी लज्जा के आभूषणों को उतार फेंकना चाहती है। वे अब इस विषय पर मुक्त होकर बात करना अधिक पसंद करती है। उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, मोना गुलाटी, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, ममता कालिया, मोना गुलाटी जैसी लेखिकाओं ने नारी-पुरुष के संबंधों को लेकर खुलकर चर्चा की है। उनके अनुसार 'सेक्स अश्लीलता का नहीं वितृष्णा का विषय है। किसी भी संदर्भ में लड़की से नारी या औरत से अनारी को कापालिक बनाने की चेष्टा उन्हें तोड़ देती है। उनकी इच्छा पुरुष इतिहास का अंत कर देने की है। नर शताब्दी में रहते हुए उनके पूरे जिस्म पर फफोले हो गए हैं। 'मणिका मोहिनी' चाहती है कि 'सोसायटी गर्ल्स' की भाँति 'सोसायटी बॉयज' भी होते तो क्या ही अच्छा होता। एसी स्थिति में समय का वह भाग जो काटे नहीं कटता, किराये पर आसानी से कट जाता। वे स्वकीय पुरुष की परकीया होना चाहती हैं। परिचय के पहले और बाद के प्रेम को अच्छी तरह जानती हैं। अपने प्रेमी के शरीर को हाथों से पढती है, संगमरमरी पहचान उन्हें अच्छी लगती है। खुशबू के रास्ते अपने को प्रेमी तक भेजती हैं। इन विचारों में नारी मन का वह पृष्ठ खुला है, जिसे कहने में अभी तक नारी झिझकती रही है।'[7] इस प्रकार वर्तमान महिला लेखन महिलओं की स्वतंत्रता के लिए समाज में आमूल परिवर्तन की कामना करता है।

इसके लिए प्राचीन मूल्य को त्यागकर नवीन मूल्यों को गढ़ने का प्रयास भी किया जा रहा है और कुछ हद तक इन मूल्यों को स्वीकृति भी मिल चुकी है। 'अकेला पलाश' की नायिका अपने मुंह बोले भाई से पूछती है- "तुम मुझे बद्चलन समझोगे क्या?' तो भाई कहता है- "नहीं मैं तो यही कहूंगा कि दीदी ने देर से ही सही पर, सही कदम उठाया है। अब मेरी दीदी घुट-घुट कर नहीं मरेगी। अब उसने भी खुली हवा में सांस लेना सीख लिया है।"[8] वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि आज का महिला लेखन इन के अंतर्मन की अभिव्यक्ति है। 'इन लेखिकओं ने नारी मन के उन चोर दरवाजों को भी खोल दिया है, जिनकी चाबी सदियों से नारी ने अपने आंचल में छुपा रखी थी। आज स्त्री के चेहरे पर कोई नकाब नहीं है। उनका व्यक्तित्व यथार्थ बोध के साथ उपन्यासों में प्रतिबिंबित हो रहा है। आज पारिवारिक जीवन नाना समस्याओं से घिरा है। इन लेखिकाओं ने पारिवारिक जीवन के घटक पर घटित होने वाले मनमुटाव एवं उनसे मुक्ति पाने के लिए संघर्ष करती हुई नरियों का चित्रण किया है।'[9] इस प्रकार महिला लेखन अनेक चुनौतियों से झुझता हुआ बड़ी तेज गति से विकास करता नजर आता है।

संदर्भ

1. 'हिंदि उपन्यासों में नारी' – डॉ. शैल रस्तोगी, पृ.-294
2. 'शोधार्णव' पत्रिका अंक जनवरी-मार्च- 2008, लेख- 'महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में लोक संवेदना'- डॉ. हेमा देवरानी, पृ.-11
3. 'शोधार्णव' पत्रिका अंक जनवरी-मार्च- 2008, लेख 'महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यौन संवेदना के बदलते परिदृश्य'- डॉ. अवधेश चंसौलिया, पृ.-94
4. 'आपका बंटी'- मन्नू भंडारी, पृ.- 45
5. 'आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास'- पारुकांत देसाई, पृ.- 25

6. ‘हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार’- डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ.- 34
7. ‘साठोत्तरी हिंदी उपन्यास बदलता व्यक्ति’- ममता, पृ.- 19
8. ‘अकेला पलाश’- महेरुन्निसा परवेज, पृ.- 152
'शोधार्णव’ पत्रिका अंक जनवरी-मार्च- 2008, लेख- ‘महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में लोक संवेदना’- डॉ. हेमा देवरानी, पृ.-6